Vedanta Desikan

Vedanta Desikan was a renowned poet, philosopher and a logician. He taught that everyone can easily attain salvation by following the practical path of prappatti, the way of loving surrender and service. His in-depth understanding of even the rival schools of philosophical thought made him a unique polymath.

Vedanta Desikan contributed to Tamil and Sanskrit literature. His works are Stotras (Devotional Poems), Vedanta Granthas, Vyaakhyaana Granthas (Commentaries), Rahasya Granthas (Esoteric Works), Kavya Granthas, drama that revealed his ingenuity, creativity, logic, linguistic expertise, devotional fervour and erudite scholarship. In all, one hundred and seventy works have been attributed to Vedanta Desikan. He has been honoured with several titles like 'Sarvatantraswatantra (Master of Everything)', 'Kavitharkika Simha (Lion among poets and logicians)' and 'Vedanthacharya (The Master of Vedanta)'. The term 'Desika' denotes Vedanta Desikan alone.

Vedanta Desikan was born in 1268 A.D. in Thoopul, Kancheepuram (Tamil Nadu). His parents were Anantasuri and Todaramba. Anantasuri was one of the seventy-four simhasanadhipatis appointed by Sri Ramanuja to spread the message of his philosophy. Anantasuri and Todaramba were childless even after many years of marriage. They went to Tirumala during Brahmotsava and prayed to Lord Venkateswara for progeny. One night, Todaramba had a divine dream in which she swallowed the bell used in the worship of the Lord. She narrated this incident to her husband the next morning. At the same time, the bell in the sanctum sanctorum was found missing. The priests and scholars deduced that the divine bell was going to incarnate from the womb of Todaramba.

The next year, on the day of the Teerthavaari of Lord Venkateswara - Purattasi Sravanam, Todaramba gave birth to a male child. The child was named as Venkatanatha and later revered as Vedanta Desikan. Vedanta Desikan is considered an avatar (incarnation) of the divine Bell of Lord Sri Venkateswara of Tirumala Tirupati.

Vedanta Desikan grew up as a prodigy. When he was seven, Kidambi Appullar accepted Venkatanatha as his disciple and taught him arts, science and scriptures. By the age of 20, he became famous for his mastery over poetry, logic, linguistics, science, Vedanta, debate and allied arts. At the age of 21, Desikan got married to Thirumangai also known as Kanakavalli. His uncle also taught him the Garuda mantra which he chanted at Oushadhagiri at Thiruvahindrapuram (near Cuddalore). Garuda gave darshan and taught him the Hayagreeva mantra. He recited that mantra and received the blessings of Lord Hayagreeva.

Some scholars had challenged Desikan to compose 1000 hymns in one day. Desikan accepted that and composed 1008 hymns on the Divine Feet (padhukas) of Lord Ranganatha of Srirangam within a short span of four hours. This work titled Padukasahasram is full of sonorous and charming poetry in praise of the divine feet of the Lord. He was also master of many other skills including carving sculptures.

Vedanta Desikan lived a humble life with his wife. He undertook a vow called uchhavritti – accepting alms for daily sustenance from his disciples without actively seeking them. Desikan stayed in several cities throughout his life such as Thiruvahindrapuram, Kancheepuram, Srirangam, Tirupati and Melkote. He also travelled widely all over India on foot. He lived for 101 years and left for his heavenly abode in 1369 A.D.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Vedanta Desikan.

Credits:

Text	:	Based on information received from the proponent
Stamp/FDC/Brochure	:	Smt. Vinita Sinha
Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts
India

वेदांत देसिकन
VEDANTA DESIKAN

विवरणिका BROCHURE

वेदांत देसिकन

वेदांत देसिकन एक प्रख्यात कवि, दार्शनिक और तर्कशास्त्री थे। उनके जीवन से यह सीख मिलती है कि कोई भी व्यक्ति, प्रपत्ति के व्यावहारिक मार्ग, अर्थात प्रेम, आत्मसमर्पण और सेवा द्वारा सरलता से मोक्ष प्राप्त कर सकता है। दर्शन के प्रतिद्वन्दी संप्रदायों के बारे में उनकी गहरी समझ ने उन्हें अद्भुत बहुज्ञ बना दिया था।

वेदांत देसिकन ने तमिल और संस्कृत साहित्य में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनकी कृतियों में स्तोत्र (भक्ति काव्य), वेदांत ग्रंथ, व्याख्यान ग्रंथ (टीकाएं), रहस्य ग्रंथ (गूढ़ कार्य), काव्य ग्रंथ, नाटक आदि शामिल हैं, जो उनकी विदग्धता, रचनात्मकता, तार्किकता, भाषाई दक्षता, भक्ति उत्साह और उनकी विद्वता दर्शाते हैं। वेदांत देसिकन को एक सौ सत्तर रचनाओं का श्रेय प्राप्त है। उन्हें कई उपाधियां, जैसे सर्वतंत्रस्वतंत्र (समस्त ज्ञाता), कवितार्किक सिंह (कवियों और तर्कशास्त्रियों में सिंह)', वेदांताचार्य (वेदों के आचार्य) प्रदान की गई हैं। 'देसिका' शब्द केवल वेदांत देसिकन को समर्पित है।

वेदांत देसिकन का जन्म 1268 ईसा पश्चात कांचीपुरम, तमिलनाडु के थूप्पुल में हुआ था। उनके माता–पिता का नाम अनंतसूरी और तोदरंबा था। अनंतसूरी, उन चौहत्तर सिंहासनाधिपतियों में से एक थे, जिन्हें श्री रामानुज ने अपने दर्शन के संदेश के प्रसार हेतु नियुक्त किया था।

अनंतसूरी और तोदरंबा को विवाह के कई वर्ष उपरांत भी कोई संतान नहीं हुई। ब्रह्मोत्सव के दौरान वे तिरूमला गए और भगवान वेंकटेश्वर से संतान के लिए प्रार्थना की। एक रात तोदरंबा ने एक ऐसा दिव्य स्वप्न देखा जिसमें उन्होंने, भगवान की पूजा के दौरान प्रयुक्त घंटी को निगल लिया। अगली सुबह उन्होंने अपने पति को इस घटना का वर्णन किया। उसी समय मंदिर के गर्भगृह में रखी घंटी खो गई। पुजारी और विद्वानों ने यह परिणाम निकाला कि तोदरंबा के गर्भ से दिव्य घंटी का अवतरण होने जा रहा है।

अगले वर्ष, भगवान श्री वेंकटेश्वर पुरट्टासी श्रवणम के तीर्थवारी के दिन तोदरंबा ने एक पुत्र को जन्म दिया। बालक का नाम वेंकटनाथ रखा गया और बाद में वह बालक वेदांत देसिका के नाम से प्रसिद्ध हुए। वेदांत देसिकन को तिरूमला तिरूपति के भगवान श्री वेंकटेश्वर की दिव्य घंटी का अवतार माना जाता है।

वेदांत देसिकन विलक्षण प्रतिभा के स्वामी थे। जब वे सात वर्ष के हुए तो किडांबी अप्पुल्लार ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया और उन्हें कला, विज्ञान और वेद ग्रंथों की शिक्षा दी। 20 वर्ष की आयु तक देसिकन काव्य शास्त्र, तर्क शास्त्र, भाषा विज्ञान, विज्ञान, वेदांत, वाद–विवाद और संबंधित कलाओं में अपनी निपुणता के कारण प्रसिद्ध हो चुके थे। उनके मामा ने उन्हें गरूड़ मंत्र की भी शिक्षा दी, जिसका उच्चारण वे औषधगिरी में तिरूवहिंद्रपुरम (कडलूर के निकट) करते थे। गरूड़ ने उन्हें दर्शन दिए और हयग्रीव मंत्र सिखाया। उन्होंने उस मंत्र का उच्चारण किया और भगवान श्री हयग्रीव का आशीर्वाद प्राप्त किया।

कुछ विद्वानों ने देसिका को एक दिन में 1000 स्तोत्र रचने की चुनौती दी। देसिका ने उस चुनौती को स्वीकार किया और केवल चार घंटों में श्रीरंगम के भगवान श्री रंगनाथ के दिव्य चरणों (पादुकाओं) के बारे में 1008 स्तोत्र रच डाले। पादुकासहस्रम नाम से रचित भगवान के दिव्य चरणों की स्तुति का यह काव्य अत्यधिक ध्वन्यात्मक और मधुर है। वेदांत देसिकन, मूर्तिकला सहित अन्य कई कलाओं में भी दक्ष थे।

वेदांत देसिकन ने अपनी पत्नी के साथ बहुत सादा जीवन व्यतीत किया। उन्होंने उच्चवृत्ति के नाम से एक शपथ ली थी, जिसके अंतर्गत बगैर सक्रिय प्रयास के वे अपने शिष्यों से दैनिक जीवन यापन के लिए भिक्षा ग्रहण करते थे। देसिकन जीवनपर्यंत थिरूवहिंद्रपुरम, कांचीपुरम, श्रीरंगम, तिरूपति और मेलेकोट्टै जैसे कई शहरों में रहे। उन्होंने पूरे भारत में विस्तृत स्तर पर पद यात्राएं भी कीं। वह 101 साल तक जीवित रहे और 1369 ईसा पश्चात उनका स्वर्गवास हो गया।

डाक विभाग वेदांत देसिकन पर एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः–

मूलपाठ	: प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री पर आधारित
डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	: श्रीमती विनिता सिन्हा
विरूपण मोहर	: श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	600500
Stamps Printed	:	600500
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक
Printer	:	India Security Press, Nashik

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00